मेरे संग की औरतें

प्रश्न १- लेखिका ने अपनी नानी को कभी नहीं देखा फिर भी उनके व्यक्तित्व से क्यों प्रभावित थी?

उत्तर १- लेखिका ने अपनी नानी को कभी नहीं देखा परंतु फिर भी उनके व्यक्तित्व से प्रभावित थी क्योंकि उसकी नानी पारंपरिक, अनपढ़, परदानशीं होने के बावजूद भी स्वतंत्र विचारधारा रखती थी। अपनी मौत के विषय में जानकर स्वतंत्रता का जुनून रखने वाली इस महिला ने अपनी मर्यादा का उल्लंघन कर अपने पति के मित्र को अपनी बेटी की शादी की ज़िम्मेदारी सौंपी। उस समय के काल व परिस्थितियों के अनुरूप यह एक अनोखा निर्णय था इसलिए अपनी माँ से ऐसी क्रांतिकारी नारी के विषय में सुन-सुनकर लेखिका उनके समक्ष नतमस्तक हो जाती है।

प्रश्न २- लेखिका की नानी के आज़ादी के आंदोलन में किस प्रकार की भागीदारी रही?

उत्तर २- लेखिका की नानी आज़ादी के आन्दोलनों में प्रत्यक्ष रूप से सहायक नहीं बनी। किसी भी क्रांति का अहम हिस्सा सिर्फ क्रांतिकारी ही नहीं, उसके संपर्क में आने वाले लोग तथा संबंधी भी होते हैं दूसरे शब्दों में युद्ध का जयघोष करने वालों का भी अपना महत्त्व होता है। उसी तरह नानी अपनी स्वतंत्रता के रंग में रंगी हुई थीं इसलिए उन्होंने अपने पति के मित्र को; जो एक स्वतंत्रता सेनानी थे; अपनी कन्या के विवाह की ज़िम्मेदारी दे दी। ऐसा कर उन्होंने स्वतंत्रता की लाखों परवानों को अपने श्रद्धा सुमन समर्पित कर दिए।

प्रश्न ३- लेखिका की माँ परंपरा का निर्वाह न करते हुए भी सबके दिलों पर राज करती थी। इस कथन के आलोक में-

(क) लेखिका की माँ के व्यक्तित्व की विशेषताएं लिखिए।

(क)

- लेखिका की माँ स्पष्ट वक्ता थीं।
- दूसरे के रहस्य को रहस्य रखना जानती थीं।
- साहित्य तथा संगीत में रूचि रखती थी।
- अपने स्वाभिमानी व्यक्तित्व, स्पष्टवादिता तथा विश्वसनीयता के कारण सबके दिलों पर राज करती थी।
- परिवार में उनके कथन का मान रखा जाता था।

(ख) लेखिका की दादी के घर में माहौल का शब्द चित्र का वर्णन कीजिए।

(ख)

- लेखिका की दादी के घर में प्रत्येक व्यक्ति को अपना जीवन जीने की स्वतंत्रता थी।
- स्वतंत्र आचरण के कारण प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व उभर कर सामने आता था।
- दादी क्रांतिकारी विचारों की महिला थीं। अपने घर की किसी लड़की को उन्होंने हीन भावना का शिकार नहीं होने दिया।
- नारी उत्थान तथा स्त्रीवाद की हिमायती थीं।
- सहजता और सरलता से हर समस्या का समाधान वह निकाल लेती थी।
- उनके घर की बहू को काम न करने पर भी कटु शब्दों द्वारा अपमानित नहीं होना पड़ता था।
- ऐसे परिवेश में रहने वाला प्राणी निस्संदेह संस्कारों और संस्कृति की गंगा में स्नान कर समाज का कल्याण करते हैं।

प्रश्न ४- आप अपनी कल्पना से लिखिए कि परदादी ने पतोहू के लिए पहले बच्चे के रूप मैं लड़की पैदा होने की मन्नत क्यों मांगी होगी?

उत्तर ४- हमारे विचारानुसार दादी ने पतोहू के लिए पहले बच्चे के रूप में लड़की इसलिए माँगी होगी-

1. परदादी सबसे अलग सोच का परिचय देना चाहती होंगी।
2. अपने क्रांतिकारी विचारों से दुनिया को परिचित करवाना चाहती होंगी।
3. पुरुष-प्रधान समाज में नारी का वर्चस्व स्थापित करना चाहती होंगी।
4. शायद वह खुद हीन भावना का शिकार रही होंगी इसलिए नारी समाज को ऐसी रुढ़िवादिता से मुक्त करवाना चाहती होगी।
5. परंपरा के अनुसार यह माना जाता है कि बेटी घर का सहारा होती है।
6. बेटी सबके प्रति प्रेम व सेवा का भाव रखती है।
7. बेटी दोनों कुलों की लाज रखती है तथा कन्या का कन्यादान करने से माँ-बाप को मोक्ष की प्राप्ति होती है।

प्रश्न ५- डराने-धमकानें, उपदेश देने या दबाव डालने की जगह सहजता से किसी को भी सही राह पर लाया जा सकता है - पाठ के आधार पर तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर ५- यह उक्ति पूर्णतः सार्थक है क्योंकि सहजता से व्यक्ति किसी भी कार्य को आसानी से कर लेता है। जब वह काम प्यार व आराम से करता है तो उसमें सफलता भी प्राप्त कर लेता है। उदाहरण के तौर पर दादी ने चोर को डराया व धमकाया नहीं अपितु अपने निष्कपट व सहज भाव द्वारा अपना मुहँ-बोला बेटा बनाकर उसे जीवन भर खेती करने के लिए बाधित कर दिया। जो काम लाखों उपदेश नहीं कर पाए, वो काम दादी के सहज, सरल व्यवहार ने कर दिखाया।

अपनी बात को हम एक अन्य उदाहरण द्वारा भी स्पष्ट कर सकते हैं। अध्यापक, अभिभावक तथा सहायक सामग्री उपलब्ध होने पर भी बच्चा अपना पाठ याद नहीं कर पाता जबकि फिल्म अथवा उसके गाने मात्र एक बार देखने पर ही उसे याद हो जाते हैं।

प्रश्न ६- 'शिक्षा बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है'-इस दिशा मैं लेखिका के प्रयासों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर ६- लेखिका जैसे शिक्षित व्यक्ति मानते हैं कि शिक्षा बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है क्योंकि शिक्षा के द्वारा ही बच्चों का सर्वांगीण विकास संभव है इसलिए लेखिका ने छोटे कस्बे बागलकोट में स्कूल खुलवाकर अपना दायित्व निभाया। इसके लिए उन्हें कटु सत्य के साथ-साथ आर्थिक परेशानियों का भी सामना करना पड़ा। कैथोलिक बिशप ने क्रिश्चियन संख्या कम होने के कारण लेखिका के समक्ष यह शर्त रखी कि उस क्षेत्र में स्कूल अगले सौ वर्षों तक चलना चाहिए। ऐसी अनीतिपूर्ण बातों के कारण लेखिका ने कुछ मेहनती और शिक्षा प्रेमी लोगों की मदद से अंग्रेजी, हिंदी व कन्नड़ पढ़ाने वाला प्राइमरी स्कूल खोला।

प्रश्न ७- पाठ के आधार पर लिखिए कि जीवन में कैसे इंसानों को अधिक श्रद्धा भाव से देखा जाता है?

उत्तर ७- जीवन में निम्नलिखित प्रकार के इंसानों को श्रद्धा भाव से देखा जाता है -

- जो व्यक्ति स्पष्टवादी होते हैं।
- जो सत्य की राह पर चलते हैं।
- जो परंपरा से हट कर कार्य करते हैं।
- जो निष्कपट भाव से दूसरों की मदद करते हैं।
- जो कर्त्तव्य निष्ठ होते हैं और
- ऐसे व्यक्ति जो एक के रहस्य को दूसरे पर ज़ाहिर नहीं होने देते।

प्रश्न ८- 'सच, अकेलेपन का मज़ा ही कुछ और है', इस कथन के आधार पर लेखिका की बहन एवं लेखिका के व्यक्तित्व के बारे में अपने विचार व्यक्त कीजिए।
ऊत्तर ८- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहते हुए भी जब वह अलग प्रकार का कार्य करता है तो वह निस्संदेह आत्मसंतुष्टि का अनुभव करता है।

लेखिका की छोटी बहन रेणु लीक से हटकर कार्य करना पसंद करती थी। इसलिए गाडी होते हुए भी गाडी में न बैठती, चुनौतियों को स्वीकार करना (जनरल थिमैया को पत्र लिखकर चित्र मंगवाना) तार्किक दृष्टि से जीवन के हर पहलू को देखना तथा स्पष्टवादिता के अलंकार से अलंकृत होना उसकी विशेषता थी। इसी स्वभाव के कारण बारिश में लबालब भरे पानी में, सुनसान सड़कों पर अकेले चलते हुए वह विद्यालय पहुँचती थी, विद्यालय बंद मिलने पर बिना किसी शिकायत के लौट जाती थी।

लेखिका ने अपनी तमाम परेशानियों के बावजूद अकेले स्कूल खुलवाने का निर्णय लिया। इसके लिए वह बड़े से बड़े अधिकारी से मिलीं। समस्या का समाधान न होने पर समाज का नेतृत्व कर अपने जैसे परिश्रमी लोगों का चयन कर अकेले स्कूल खुलवाया। कर्तव्य की राह पर दोनों बहनें अकेले चली और नतीजे में आत्मसंतुष्टि के आनंद को प्राप्त किया। यकीनन 'अकेला चना भी क़यामत ला सकता है'।

श्रीमती एस.धीर